भारत में जनांकिकी संक्रमण और शिशु मृत्यु -दर

निकहत परवीन*
डॉ० मधुरिमा मिश्रा**

भारत में जनांकिकी विशेषता शिशु मृत्यु-दर के लिए एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है। जन्म-दर तथा मृत्यु-दर दोनों ही 1951 तक नीचे की ओर गिरता रहा, लेकिन जन्म-दर की तुलना में मृत्यु दर 2020 तक ज्यादा कम हुआ। परिणामतः औसतन 2 से 2.4 प्रतिशत वार्षिक राष्ट्रीय वृद्धि दर रहा। 1980 के मध्य में प्रजननता का दर ऊँचा और मर्त्यता का दर निम्न रहा। इसका अर्थ यह है कि विकासशील देशों जैसे भारत में 40 प्रतिशत जनसंख्या 15 वर्ष उम्र के नीचे थी। भारत, विश्व में चीन के बाद दूसरा महत्त्वपूर्ण अधिक जनसंख्या वाला देश है। भारत का विकास एक महत्त्वपूर्ण अध्ययन का विषय है। भारत लगातार आर्थिक समस्याओं का सामना करता रहा है, जैसे—गरीबी की समस्या, असमान आय, बढ़ती हुई बेरोजगारी, क्षेत्रीय असंतुलन, अधिक जनसंख्या के लिए निवास की कमी, जिसका सम्बन्ध जनसंख्या वृद्धि से है।

जनसंख्या विस्फोट, विकासशील देशों की जनसंख्या एवं संसाधनों के बीच मौलिक रूप से असंतुलन की स्थिति पैदा कर देता है। जब तक जनसंख्या वृद्धि को रोकने का प्रयास नहीं किया जायेगा, तब तक आर्थिक विकास अवरूद्ध रहेगा। जनसंख्या विस्फोट विभिन्न देशों में तथा सम्पूर्ण दुनिया में अस्थिरता एवं शांति के लिए खतरा बना हुआ है। भारत में दो महत्त्वपूर्ण कारकों से समस्याएँ उत्पन्न होती हैं—प्रथम भारत की जनसंख्या वृद्धि-दर, दूसरा यह कि भारत अन्य देशों की तुलना में जनसंख्या नियंत्रण तत्काल करे। यहाँ पर यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि भारत जनसंख्या नियंत्रण करना चाहता है, फिर भी 1951 तक भारत में लगातार जनंसख्या की वृद्धि होती रही। 1941-51 के बीच भारत की जनसंख्या की वृद्धि दर 12.5 प्रति 1000 तक रहा। 1951-1961 तक यह दर बढ़कर 18.9 हो गया और 1961-71 तक 22.2 पर पहुँच गया। इसका अर्थ यह है कि 1961-71 तक जनसंख्या का दर ज्यों-का-त्यों प्रति एक हजार पर बढ़ते रहा। यही क्रम 1971-1981 तक भी रहा। लेकिन 1991-2010 तक जनसंख्या की वृद्धि दर में गिरावट देखी गई। वहीं संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या की रिपोर्ट के अनुसार 2010 से 2020 के बीच भारत की आबादी की कुल वार्षिक वृद्धि दर 1.20 से बढ़कर 1.36 हुई है, जो कि चीन की वार्षिक वृद्धि दर के मुकाबले दोगुनी है।

***शोधार्थी : गृह विज्ञान विभाग वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)**
****शोध—निर्देशक : एसोसिएट प्रोफेसर, गृह विज्ञान विभाग महिला कॉलेज, डालमियानगर, डिहरी—ऑन—सोन**

जनसंख्या वृद्धि एवं आर्थिक विकास के बीच निकट का सम्बन्ध है। दोनों एक दूसरे से अर्न्तसंबंधित तथा अर्न्तनिर्भर हैं। यह समझना आवश्यक है कि जनसंख्या वृद्धि किस प्रकार भारत के आर्थिक विकास को प्रभावित करता है। यह सत्य है कि सिर्फ जनसंख्या का विकास ही एक कारक नहीं है, बल्कि देश का उत्पादन भी उत्तरदायी है। जनसंख्या समस्या कोई नयी बात नहीं हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद इस समस्या पर विशेष ध्यान दिया गया। 1947 में संयुक्त राष्ट्र संघ जनसंख्या आयोग ने विकासशील देशों से इस संबंध में सूचनाएँ एकत्रित की। तत्पश्चात् संयुक्त राष्ट्र संघ विश्व जनसंख्या पर बड़े-बड़े सेमिनारों का आयोजन किया। सर्वप्रथम 1954 में रोम में यह सेमिनार आयोजित किया गया। तीसरा विश्व जनसंख्या सेमिनार 1974 में केन्या की राजधानी नैरोबी में आयोजित किया गया, जिसमें विकास के लिए जनसंख्या नीति बनाई गई। इसी तृतीय विश्व जनसंख्या सेमिनार में जनसंख्या की समस्याओं पर विभिन्न प्रकार के मत व्यक्त किये गये। एक दूसरा विचार यह आया कि जनसंख्या की समस्या कृत्रिम समस्या है, जो प्रभावशाली एवं धनी देशों के अभिकरणों एवं संस्थाओं द्वारा उठाया गया, ताकि ये अविकसित देश इन धनी देशों पर निर्भर हो सकें। अधिक जनसंख्या वाले देश में उपभोक्ता अधिक पाये जायेंगे, जो कि आर्थिक उत्पादन के पक्ष में होगा। निम्न उत्पादन महँगा होगा तथा इसके लिए अधिक-से-अधिक श्रम की आपूर्ति की आवश्यकता होगी। जहाँ पर अधिक जनसंख्या होगी, वहाँ पर आर्थिक एवं सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न होंगी।

जनसंख्या वृद्धि एवं आर्थिक विकास के बीच अर्न्तसम्बन्धों को जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत के आधार पर पूर्णतः विवेचित कर दिया गया है, जिसके द्वारा सभी समकालीन विकासशील देशों को कम या अधिक मात्रा में गुजरना पड़ता है। यहाँ पर जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत की विवेचना आवश्यक है।

ऐतिहासिक प्रमाण के आधार पर जनसंख्या वृद्धि एवं आर्थिक विकास को जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत के रूप में संश्लेषित किया गया है। अधिकांश विद्वानों ने आर्थिक विकास के स्तर, जो जन्म-दर एवं मृत्यु-दर के स्तर से प्रत्यक्षतः प्रभावित होता है, को आधार बनाया है। ब्लैकर ने प्रजननता एवं मर्त्यता के आधार पर जनसंख्या वृद्धि को पाँच स्तरों में विभक्त किया है, जिसे उच्च स्थिर स्तर, प्रारम्भिक विस्तार स्तर, विलम्ब विस्तार स्तर, निम्न स्थिर स्तर तथा ह्रासमान स्तर कहा जाता है। थॉमसन तथा नोटसीन ने भी इसी जनांकिकी प्रत्यय को आधार मानते हुए जनांकिकी संक्रमण को तीन स्तरों में विभाजित किया है।[1] उन्होंने मध्य स्तर को

संक्रमण का स्तर बताया है। टोबारो ने सहानुभूतिपूर्वक इन्हीं स्तरों को स्वीकार करते हुए जनांकिकी संक्रमण के सिद्धांत की व्याख्या की है। उन्होंने लिखा है कि सभी समकालीन विकासशील देश कम या अधिक इन्हीं तीन स्तरों से होकर परिवर्तित होता है। उन्होंने सभी देशों के आर्थिक विकास एवं आधुनिकीकरण के लिए उच्च जन्म-दर एवं मृत्यु-दर को ही उत्तरदायी बताया है। दूसरे स्तर में उन्होंने आधुनिकीकरण को जन-स्वास्थ्य के विकास, उच्च आय, मृत्यु-दर में कमी, 40-60 वर्ष उम्र तक जीवन प्रत्याशा में वृद्धि को सम्बन्धित किया है। अंतिम और तीसरे स्तर में उन्होंने प्रभावशाली आधुनिकीकरण तथा विकास के लिए प्रजननता दर में कम करने की बात कही है। जब जन्म-दर कम हो जाता है, तो मृत्यु-दर भी कम हो जाता है। उन्होंने जनसंख्या वृद्धि को भी कम करने की बात कही।[2]

ऐतिहासिक प्रमाणों एवं जनांकिकी सांख्यिकी के आधार पर यह आसानी से कहा जा सकता है कि अधिकांश ततीय विश्व देश इसी द्वितीय स्तर से जनांकिकी संक्रमण सिद्धांत को अपनाकर जनसंख्या वृद्धि दर को वार्षिक 2.0 से 2.5 तक करना चाहते हैं।[3] माल्थस ने भी प्रारम्भ में ही जनसंख्या-वृद्धि स्तर की चर्चा की थी। उन्होंने लिखा है कि यदि जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित नहीं किया गया, तो यह ज्यामितीक औसत से बढ़ेगा और खाद्य आपूर्ति अंकगणितीय औसत से होगी। इस प्रकार माल्थस के अनुसार आर्थिक विकास, जनसंख्या एवं उत्पादन अंर्तसम्बन्धित हैं।[4]

जनसंख्या वृद्धि पर आर्थिक विकास का प्रभाव स्वयं जनसंख्या वृद्धि का निर्णायक है। कूले तथा हुबर ने स्पष्ट किया है कि जन्म-दर, मृत्यु-दर तथा प्रवास जनसंख्या वृद्धि के मुख्य निर्धारक है।[5] इन्होंने इस वृद्धि को प्रभावित करने वाले प्रवास को महत्त्वपूर्ण कारक नहीं माना। ये सभी कारक प्रत्यय के रूप में जाने जाते हैं, लेकिन कुछ अजनांकिकीय कारक हैं, जो प्रत्यक्षतः और कभी-कभी अप्रत्यक्ष रूप से स्वाभाविक वृद्धि स्तर को प्रभावित करते हैं। दोनों कारक संयुक्त रूप से प्रजननता, मर्त्यता, स्थानिक-वितरण, अर्न्तराष्ट्रीय प्रवास तथा सामाजिक-आर्थिक पुर्नरचना से नामित किये जा सकते हैं।[6]

अतः जनसंख्या विज्ञान में जनांकिकी संक्रमण की सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका है। जनांकिकी संक्रमण से संबंधित अनेक सूचनाएँ एकत्रित की जाती हैं। इन घटनाओं को जनांकिकी संक्रमण की घटनाएँ कहते हैं, जैसे–भ्रूण-मृत्यु, मृत-प्रसव, शैशव-तारूण्य, विवाह, तलाक, पृथक्करण, मृत्यु इत्यादि प्रमुख जनांकिकी संक्रमण घटनाएँ हैं। इसके अतिरिक्त प्रजननता, मरणशीलता इत्यादि को भी सम्मिलित किया गया है। यहाँ पर शिशु-मृत्यु से संबंधित तथ्यों की विवेचना की जायेगी।

जब कभी किसी शिशु की मृत्यु जन्म के बाद होती है, तो उसे शिशु मृत्यु में शामिल करते हैं। शिशु मृत्यु में बच्चा जीवित अवस्था में जन्म लेता है। किन्तु जन्म

लेने के कुछ समय बाद उसकी मृत्यु हो जाती है। यदि जन्म के चार सप्ताह के अन्तर्गत मृत्यु हो जाती है, तो उसे नवजात मृत्यु कहते हैं और चार सप्ताह के बाद की मृत्यु को शिशु मृत्यु कहते हैं। नवजात एवं शिशु मृत्यु में अन्तर इसलिए किया जाता है कि नवजात मृत्यु के कारण भिन्न होते हैं और शिशु मृत्यु के कारण अलग होते है। सामान्यतया जन्मजात रोग या दोष के कारण शिशु की प्रथम चार सप्ताह में मृत्यु हो जाती है। यदि ये शिशु चार सप्ताह जीवित रह लेता है, तो उस पर मृत्यु दर का दबाव कम हो जाता है। इसके पश्चात् मृत्यु का कारण सामान्यतया बाह्यगत होते हैं, जैसे–दूषित वातावरण, आहार की कमी, सेवा की कमी इत्यादि। इस पर अंकुश लगाया जा सकता है। जब चार सप्ताह के बाद बच्चा किसी कारणवश मर जाता है, तो उसे शिशु मृत्यु कहते हैं।

मृत्यु संबंधी घटनाओं का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि मृत्यु का दबाव समाज के सभी वर्गों में समान रूप से नहीं पाया जाता है। किसी आयु वर्ग में मरण-दर अधिक होता है, तो किसी आयु वर्ग में मरण-दर कम होता है। मृत्यु का दबाव जन्म के प्रारंभिक वर्षों में अधिक होता है, जबकि आयु बढ़ने के साथ-साथ मृत्यु-दर कम होता जाता है। किन्तु 50-55 की उम्र पार होने के बाद फिर मष्त्यु-दर की बारम्बारता बढ़ने लगती है। यदि इसी को सही ढंग से प्रस्तुत किया जाए, तो मृत्यु के दबाव की वक्र आकृति बनती है।

चूँकि वृद्धावस्था में घटित मृत्यु को स्वभाविक कहा जा सकता है, किन्तु शैशव मृत्यु एक अस्वाभाविक मृत्यु है तथा इस आयु में मृत्यु का दबाव ऊँचा होना समाज के लिए घातक है। यही कारण है कि जनांकिकी विद्वानों ने शिशु मरण-दर को प्रारंभ से ही गंभीरतापूर्वक अध्ययन किया है।

शिशु मर्त्यता का आशय उन बच्चों की मृत्यु से है, जिनकी मृत्यु प्रथम जन्म दिवस से पूर्व हो जाती है। जनसंख्या के आंकड़ों के संबंध में ऐसा बताया गया है कि मृत्यु का दबाव जन्म के प्रारंभिक वर्षों में अत्यधिक होता है, अतः बच्चों की मृत्यु-दर बहुत अधिक होती है।

सन्दर्भ :–

1. पंत, जे० सी०, जनांकिकी, जालन्धर, 2009
2. पंत, जे० सी०, जनांकिकी, जालन्धर, 2009
3. श्रीवास्तव, एस० सी०, जनांकिकीय अध्ययन के प्रारूप, मुम्बई, 1999
4. पंत, जे० सी०, जनांकिकी, जालन्धर, 2009
5. कूले, सी० एच०, सोशल ऑर्गनाइजेशन, फ्री प्रेस पब्लिकेशन, न्यूयार्क
6. पंत, जे० सी०, जनांकिकी, जालन्धर, 2009

••०••